परिशिष्ट-१ पृष्ठभूमि

धरती और बीज-संबंधी लोकवार्ता (उदाहरण)

१.१. पीपलपूजा की कथा

एक ननद थी, एक भौजाई थी। भारी कातिक-स्नान करके पीपल की पूजा करने जाती, उसके साथ ननद भी कातिक नहाती और पीपल की पूजा करती। पीपल की परिक्रमा करके भाभी कहती-'पीपल देव सनीचर देव, मेरी गोद में लरका देउ।'

ननद कहती-'पीपल देव सनीचर देव, भाभी गोद में लरका देउ।'

भाभी गर्भवती हुई, ननद की उँगली में भी एक छाला उठ आया। जैसे-जैसे भाभी का गर्भ बढ़ता, वैसे-वैसे ननद का छाला बढ़ता। भाभी के लड़का हुआ, ननद का छाला फूट और उससे भी लड़का हुआ। भाभी दोनों बच्चों को पालने लगी, परंतु उसने अपने पति को दूसरे बच्चे का पता न चलने दिया। एक दिन भाभी ननद के बच्चे को खिला रही थी-'रे बिना बाप के पूत, कहाँ ते ढरक पर्यौ ?' इतने में ही पति आ गया। उसने पत्नी को विवश कर दिया कि-'बता, तू किससे क्या कह रही थी ?' अंत में भाभी ने पीपल के पूजने से लेकर छाले फूटने तक का वृत्तांत कह सुनाया। भाई को विश्वास नहीं हुआ, 'यह कैसे हो सकता है ?'

भाभी बोली-'पीपल देव से जाकर पूछ लो।' भाभी-भाई और सभी रिश्तेदार बालक को लेकर पीपल के पास गए। भाई ने कहा-'हे पीपल देव, सनीचर देव, यदि यह आपका लड़का है, तो आप इसे लौटा लें।' पीपल का तना फट गया और वह बालक उसमें समा गया। पर पीपल-देवता के प्रति अविश्वास के कारण भाई को कुष्ठ हो गया।

कुछ दिन बाद भाभी ने कहा कि यह कुष्ठ अविश्वास के कारण हुआ है, आप चलकर पीपल-देव से अपराध की क्षमा माँगें। भाई और भाभी पीपल के पास गए-'हमारा सत भानजा लौटा दो और कसूर माफ करो।' पीपल का तना फिर फटा और वह बालक फिर निकल आया। लोगों ने उस बालक से कहा-'बेटा, मामा के ऊपर थूक दो।' बालक ने मामा पर थूका और मामा का कुष्ठरोग दूर हो गया।

- पीपल पूजा-परिक्रमा करके स्त्रियाँ यह कथा कहती और सुनती हैं।

-स्रोत : भारतीय साहित्य, अक्तूबर, १९६० तथा कलावती भूआजी, सासनी

१.२. तुलसी पूजा के गीत

तुलसी माता, तू सुख दाता, तू श्रीकृष्ण की प्यारी।
मैं बिरुला सींचों तेरौ तू कर निसतारौ मेरौ।
मूँग भात कौ खायबौ दीजो, पीतांबर को पैरबौ दीजो।

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

चंदन की लकड़ियाँ दीजो, श्रीकृष्ण कौ कंधा दीचो।
- श्रीमती चंदोदेवी

तुलसी विवाह

आषाढ़े उजियारीउ तीजा, लैरे बोवउ रानी तुलसी के बीजा।
जोतहु बोवहु करहु कियरिया, धनि जा मलिया बेटा हू जायौ
तुलसी कौ बिरवा सींच जमायौ।
सावन तुलसा पात-दुपाती भादों तुलसा गहर गँभीरी
क्वार में तुलसा कान कुँवारी कातिक तुलसी कौ रचौ बियाहू।
सूरज न ब्याहूँ उअत डहाएँ चाँदुल न ब्याहूँ एक पखवारे,
ब्रह्मा न ब्याहूँ चार मूड बारे, विष्णु न ब्याहूँ चार भुजाधारी।
महादेव न ब्याहूँ वे जटाधारी, हनुमान न ब्याहूँ वे बलधारी।
शुक्रहि न ब्याहूँ एक आँख काने, शनीचर न ब्याहूँ गिरहन घेरे।
मंगल न ब्याहूँ हीरा पीरि वारे, बुद्ध न ब्याहूँ बुद्ध कुबुद्धी।
बिसपित न ब्याहूँ विसपित सीरी, गणेश न ब्याहूँ सूँड सुँडारे।
ब्याहूँ श्रीकृष्ण वे मेरे कंता, ब्याहूँ श्रीकृष्ण जग उजियारौ।
सोदहु पंडित लगुन लिखाबौ, तुलसा की लगन द्वारका पठावौ।
नौमी के माँगर दसमी कौ तेला एकादशीया कौ मंडप छबाऔ।
पवित्रा द्वादशी ब्याह रचायौ।
हरे हरे गोबर अँगन लिपाऔ गज मुतिमन के चौक पुराऔ
हरे हरे बाँसन मंडप छवायौ नागबेलि हूँ कौ गूँद भरियौ।
पियरी सी माटी बेदी हू राची वेदीन रचहु पँवारन केरा।
रावटी सिल देहु घनेरा।
ता सिल बैठे तुलसादे रानी।
सब सखियन मिल तेल चढ़ाई गंगा-गवरि मिल मंगल गावें।
तुलसा के हुतु कुटुंबी आए, तुलसा को नाना भूषण लाए।
तुलसा के माँई मामा हू आए, तुलसी को खादी बरैया लाए।
कृष्ण के माँई मामा हू आए, कृष्ण कों भौंर-कजोंरा लाए।
घुड़िला चढ़ि वे सूरज आए हिरना चढ़ि वे चाँदुल आए।
हंसा चढ़ि ब्रह्मा जी हू आए, गरुड़ चढ़ि विष्णु जी हू आए।
नदिया चढ़े महादेव आए, पवन उड़त हनुमान जी आए।
मूसे चढ़े गणेश जी आए, कमल के फूल लक्ष्मी जी आई।
भैंसा चढ़े सनीचर आए, करए की टोटनी पै सुक्कुर आए।
उपला चढ़ी वे बिसपति आई, बरोसी चढ़ी बैंसादरी आई।
हथिया चढ़े सब देवता आए स्थ चढ़ि कें हरि आपुन आए,
सोने के रथ पै श्रीकृष्ण आए।
हल्दी की गाँठ सेंदुर की पुरिया तुलसा श्रीकृष्ण परहि भँवरिया।

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

कानन खुँटिया पाँयन पोला तुलसा के ब्याह कौ साजौ है डोला।
इड़ियाँ महाउर माँग सिंदूर तुलसा के ब्याह कौ बाजौ है तूर।
पहली भाँवर दूसरी कीजै त्यों-त्यों तुलसा सुहागन भीजै।
तीसरी भाँवर पान जनेऊ दीजै, चौथी भाँवर दैन-दाजयौ दीजै।
पंचम भाँवर पंचहड़ दीजै, छटई भाँवर माला मुदरिया दीजै।
सतई भाँवर रानी तुलसा हू दीजै।

- श्रीमती कुसुम तथा ब्रज के लोकमंगल का संसार

रायमला सबते पैलैं बड़ी भाभी के पास गयी, वानें नाईं कर दीनी। ऐसे ई छै भाभीन के पास गयी, फिर काऊ नें रायमला कों सारी न दीनी। रायमला सातईं भाभी के पास पौंची। सातईं भाभी बोली-सिंदूक में ते जो सारी अच्छी लगै वाय पैर जा।

रायमला अच्छी सी सारी पैरकें मेला कों चली, तौ चिरैया ने बापै बीट कर दीनी। मेला ते लौटकें रायमला ने सारी भौत साफ करी लेकिन वाकौ दाग न छूटौ। रायमला ने सारी की तै बनाय कें जैसी की तैसी सिंदूक में रक्ख दीनी।

एक दिना की बात, भाभी नें अपनी सारी देखी, तौ वौ खटपाटौ लैके पर गयी। भैया आयौ तौ वानें कही-'तू मोय बताय, का बातै ? जानें तोय गुसाँ कियौ ऐ, वाय जीउत न छोड़ंगो।' भाभी ने सिगरौ किस्सा कहि सुनायौ और बोली-'जब तक अपनी भैन के खून में मेरी सारी न रंगबाऔगे, अन्न-जल न लेंउगी।' भैया नें रायमला ते कही-'चलौ भैना, भौत दिना है गए आज तो ननसार माँऊँ डोलि आमें।' भैन राजी है गयी। भैया नें अपने संग गरसा रक्ख लीनों और भैनै लैकें ननसार माँऊँ चल दियौ।

जेठ की टीकाटीक दुपहरिया। भैन थककर कें पेड़ के नीचें लोटी, सो वाय नींद आय गयी। भैया नें मौंको देखकें वाकी गरदन गरसा से काट दीनी और वाके खून ते अपनी बऊ की सारी रँग लीनी। भैन कौ सरीर एक गड्ढे में दाबकें घर लौट आयौ। मैया ने पूँछी तौ कहि दीनी, 'रायमला नानी नें रोक लीनी ऐं।'

कछू दिना पीछें रायमला कों लिबायबे के लियें सासरे ते नउआ चलौ। वौ बाई रस्ता ते आयौ जा रस्ता में भैया नें रायमला कों गड्ढे में गाढ़ौ ओ। वा ठौर पै एक गेंदा कौ पौधा उगि आयौ ओ और सुंदर फूल खिल हे। जैसें ई नाऊ नें फूल लैव कों हाथ बढ़ायौ, पेड़ के नीचे ते अबाज आई-

सासरे के नउआ फूल मत तोरै डार मत मोरै
भैया नें मारी भभज मरवाई
मेरे ई खून ते चूँदर रँगाई में ऊँ बेटी रायमला।

नउआ वा बोल ऐ सुनकें अचरज में पर गयौ और उल्टौ लौट गयौ। रायमला के ससुर कों किस्सा बतायौ तो ससुर चल दीनौ और वाई ठौर पै आयो। जैसें ई ससुर नें फूल तोरबे को हाथ बढ़ायौ वैसें ही अबाज आई-'प्यारे ससुर जी फूल मत तोरौ डार मत मोरौ।'

नउआ के संग ससुर बहू के मायके में आयौ। मायके बारेन नें कही कि रायमला ननसार गयी ऐ। ससुर नें जोर दियौ तौ बुलउआ ननसार गयौ। ननसार में आदमी पोंहचौ तौ बाकी बात सुनकें मामा कों अचरज भयौ। यहाँ तौ भांजी आई नाँय नै। रायमला कौ मामा बिनके संग चल दियौ, रस्ता में फिर गेंदा कौ फूल मिलौ। मामा ने फूल तोरबे

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

कों हाथ बढ़ायौ, सोई अबाज आई-'मामा रे मामा, फूल मत तोरौ डार मत मोरौ।'

मामा कों अचरज भयौ और सबके संग अपनी बहन कें आयौ और सिगरौ हाल कहि सुनायौ। अब तौ रायमला के मैया, बाप, भैया, मामा, ससुर और नउआ गेंदा के पास आए। मैया नें जैसे ई फूल तोरबे को हाथ बढ़ायी वैसें ई अबाज गूँजी-'मैया री मैया फूल मत तोरे।' मैया सब बात समझ गयी और वाई भैया ते फूल तोरबें की कही। डरपत-डरपत भैया नें फूल तोरवें कों अपनों हाथ बढ़ायौ तो फिर वैसें ई आवाज गूँजी।

सबने पेड़ खेदबे की तै करी। पेड़ खोदौ तौ वाके नीचें एक सुंदर कन्या निकरी। वानें सच्चौ-सच्चौ हाल बतायौ और कही कि मेरे भइया कौ कसूर माफ कियौ जाय।

-श्री नरेंद्रपाल सिंह के द्वारा संकलित कहानी के पाठ में गेंदा के स्थान पर पियाबाँसे का उल्लेख है।

स्रोत : श्रीमती कमल चतुर्वेदी

१.४. अनार

एक राजा के सात लड़के थे, जिनमें छः विवाहित और एक अविवाहित था। छठी रानी खाना बना रही थी। छोटे देवर ने आकर कहा कि भाभी खाना मुझे तुरंत दो। यह सुनकर रानी ने कहा कि इतनी जल्दी है तो जाकर अनारदानी ले आओ। राजकुमार अनारदानी लेने चल दिया। वह चलते-चलते दूर बीयावान जंगल में पहुँचा, जहाँ एक साधु तपस्या कर रहा था, जिस पर धूल जम रही थी। राजकुमार साधु के शरीर की सफाई कर बैठ गया। साधु की हरे राम कहते आँख खुली तो राजकुमार से कहा-'जो कुछ माँगना है, वह माँग लो।' राजकुमार ने कहा कि मुझे अनारदानी चाहिए। साधु ने उसे दूसरे साधु के पास भेज दिया। फिर राजकुमार तपस्या में लीन साधु की सफाई कर बैठ गया। साधु ने हरेराम हरेराम कहते आँख खोलकर पास में बैठे राजकुमार से कुछ माँगने को कहा। राजकुमार ने फिर अनारदानी माँगी। साधु ने कहा कि आगेवाले साधु के पास चला जा। वह तीसरे साधु के पास गया। उनके शरीर की सफाई कर बैठ गया। साधु ने हरेराम हरेराम कहते आँख खोली और पास में बैठे राजकुमार से कुछ माँगने को कहा। राजकुमार ने फिर से अनारदानी माँगी। साधु ने धूप, मेह और आँधी की तीन पुड़िया देकर कहा,'जा पास के बाग में अनारदानी ले आ। दानव तुझे नहीं तोड़ने देंगे। जब अनारदानी तोड़े तो तीनों पुड़ियों को छोड़ देना। फिर अनारदानी लेकर मेरी कुटिया में आ जाना।'

वह अनारदानी तोड़ने गया तो दानव निकल पड़े। राजकुमार ने तीनों पुड़ियाँ छोड़ दीं, तो धूप, आँधी तथा मेह आ गए। वह अनारदानी तोड़कर भागा तो दानव भी पीछे चोर-चोर कहते चले आए। राजकुमार साधु की कुटिया में चला गया। दानवों ने साधु से कहा कि महराज, आपकी कुटिया में चोर है। साधु ने दानवों को भगा दिया।

साधु ने राजकुमार से कहा कि सावधानीपूर्वक जाना। राजकुमार चल दिया। जब वह दूसरे साधु के पास आया तो उसने पहले ही अनारदानी को तोड़ लिया, जिसमें से एक अति सुंदर राजकुमारी निकली। राजकुमारी बैठ गई। राजकुमार उसके घुटने पर सिर रखकर सो गया। वहाँ महतरानी सफाई करने आई। उसने देखा कि राजकुमार के साथ एक अति सुंदर राजकुमारी है, तो उसने राजकुमारी से बाग देखने को कहा। राजकुमारी राजी हो गई। वह एक कुएँ के पास ले जाकर राजकुमारी से बोली-'इस कुएँ में एक सुंदर फूल है। तुम मेरे कपड़े पहनकर फूल को देखना।' महतरानी ने राजकुमारी के कपड़े पहने और राजकुमारी ने महतरानी के कपड़े पहन लिए। जब राजकुमारी ने कुएँ में

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

झाँका तो महतरानी ने धक्का दिया तो राजकुमारी कुएँ में गिर गई। कुएँ में एक फूल बन गया।

महतरानी राजकुमार के पास आकर बैठ गई। जब राजकुमार ने आँख खोली तो देखता ही रह गया। महतरानी ने कहा कि देखते क्या हो, धूप के कारण मेरा रंग ऐसा हो गया है। राजकुमार ने सूचना भेजी कि मैं अनारदानी लेकर आ गया हूँ, मेरे लिए रथ भेज दिया जाए। रथ आया तो उसमें बैठकर चल दिया। घर पहुँचा तो रानियाँ कहनें लगीं कि राजकुमारी नहीं है, यह तो महतरानी-सी लगती है। राजकुमार बाग के कुएँ से लोटा भरकर पानी लाया तो उसमें फूल आ गया। फूल उसने कमरे में रख दिया। फूल को तोड़कर महतरानी ने घर के पीछे डाल दिया तो एक अनार का पौधा बन गया, जिस पर एक अनार भी लटक रहा था। महतरानी ने राजा से कहकर बढ़ई द्वारा अनार का पेड़ कटवा दिया। जब बढ़ई ने अनार तोड़ा तो उसमें से एक सुंदर कन्या निकली, जिसे वह अपने घर ले गया। सुंदर कन्या बढ़ई की छत पर खड़ी थी। महतरानी ने उसे देखकर राजा से उसे मखाने को कहा।

राजकुमार संशय में पड़ गया। सोचने लगा कि कभी अनार कटवाती है, तो कभी कन्या को मरवाती है। राजा ने बढ़ई को बुलाया तो उसने कहा कि यह कन्या अनार में से निकली है। फिर कन्या को बुलवाया तो उसने राजकुमार को पूरी कहानी सुनाई। महतरानी को घर से निकाल दिया गया और अनारदानी रानी हुई।

स्रोत : श्री नरेंद्रपाल सिंह, सासनी

१.५. ब्रज लोकोक्तियाँ

१. अंधी रंडी पीपर तर डेरा
२. अंबा फूलै नबि चलै
३. अपनी तूमरी अपनों राग
४. अपने बेर मालिन खट्टे नाँय बताबै
५. अमर बेल बिन मूर की प्रतिपालत है ताहि
६. अमरौती खाय कें कोई नाय आयौ
७. आकास ते गिरे खजूर पै अटकै
८. आम के आम गुठलिन के दाम
९. आम को दुनियाँ सींचै बबूर को कोऊ न सींचै
१०. आम से टपका बबूल में अटका
११. आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास
१२. इमली के पात पै बरात का डेरा
१३. इमली बूढ़ी है जायगी फिर खटाई तौ ऊ न छोड़ेगी
१४. उपजैगौ बाँस न होयगी बाँसुरी
१५. ऊँट न आक बकरी न ढाक
१६. ऊसर खेत में केसर
१७. एक अनार सौ बीमार
१८. एक करेला दूसरे नीम चढ़ा
१९. एक कूँड़ में द्वै सरकंडे अपने अपने भाग

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

एक छील के कलम बनाई एक छाई छप्पर छान

२०. एक दिना फल फूल कें को न भयौ पतझार
२१. एक नीम घर-घर सीतला
२२. एक पेड़ बकायन कौ मीयाँ कहै मैं बागबान
२३. एक हल्दी की गाँठ पंसारी की दुकान
२४. ऐसे फरफेंदुआ मीठे होते तौ घोंदुआ न छोड़ते
२५. ऐसे फूल काँ जो महेस पै चढ़ें
२६. कबू घी घना कबू मुट्ठी चना
२७. करमन की गाँठ कड़ी
२८. करील जो न फूलै बसंत चों न ऊलै
२९. कहु रहीम कैसें निभै केर-बेर कौ संग
३०. कहाँ बाँस की पूँगरी कहाँ अंड कौ लठा
३१. कहूँ कहूँ गोपाल की गयी सिटल्ली भूल
काबुल में मेवा करी ब्रज में किए बबूल
३२. कहै खेत की सुनै खलिहान की
३३. काँटौ काँटे ते ई निकरै
३४. काँटौ निकरौ पीर गयी
३५. काँटौ बुरौ करील कौ औ बदरौटी घाम
३६. काँस कौ खेत स्वाँस की बीमारी अफसर की यारी
न बचै तौ होय ख्वारी
३७. का बरसा जब कृषि सुखाने
३८. काहू को बैंग बाबरे काहू को बैंगन पत्थ
३९. कुत्ता घास खाय ले तो दुनियाँ पाल ले
४०. कोऊ रूख जहाँ नहीं तहाँ अरडै रूख
४१. कोदों महुआ अन्न नाँहि कोरी कढ़ेरे जन्न नाँहि
४२. क्षण भंगुर जीवन कि कलिका
कल प्रात को जानें खिली न खिली
४३. खरबूजा ऐ देख कें खरबूजा रंग बदलै
४४. खात निबौरी दाख बताबै
४५. खीचरी कौ एक चामर देखौ जाऐ
४६. खीरा कौ मोंह काट कें मलियै नौंन लगाय
रहिमन करुए मुखन को चहिए यही सजाय
४७. खुरमुंडी चाँद करब ढोबै लगै फटैरौ तब रोबै
४८. गधन कों जायफल नाँय दयौ जात
४९. गधा चरै खेत में पाप न पुन्न
५०. गन्न टेढ़ो ऐ परि रक टेढ़ो नाँ ऐ
५१. गाजर कौ संख बजौ तौ बजौ नईं कुतर कायौ
५२. गिलहरी कूँ गूलर मेवा

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

५३. गिलोय और नीम चढ़ी
५४. गीदी गाय गिलोंदे खाय दौर दौर महुआ तर जाय
५५. गूलर के फल में भुनगा ई भुनगा
५६. गूलर रोई फूल कूँ फल को रोयौ फरास
५७. गेहूँ के संग बथुआ ऐ पानी लग जात्वै
५८. गेहूँ के संग घुन पिसै
५९. गेहूँ खेत में बेटा पेट में
६०. गेहूँ पै ओरे परे खत्तुआ ऐ हाथ खूब लगे
६१. ग्वा गान में न जानों ग्वा के रूख का गिनबौ
६२. चंदन की कुटकी भली गाड़ी भरौ न काठ
६३. चंपा तोमें तीन गुन रूप रंग अरु वास
६४. चुन चुन कलियाँ महल बनाया हंस कहै घर मेरा
ना घर मेरा ना घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा
६५. चोर की दाढ़ी में तिनका
६६. छछूँदर के सिर में चमेली का तेल
६७. जड़ काटत जाय पानी देत जाय
६८. जहाँ पुष्प तहाँ बास है जहाँ बास तहँ भौंरे
६९. जा के परे स्वभाव जायँ नहिं जी ते
नीम न मीठे होंय सींच गुड़ घी ते
७०. जा दिन मन पंछी उड़ जै हैं
ता दिन तेरे तन तर-बर के सबै पात झरि जै हैं
७१. जा नर देही पै दूब जमैगी रुगि चुगि जांगी हर की गाय
७२. जा रस्ता में काँटै होंय ग्वा रस्ता क्यों चलैं?
७३. जिन दाखें चाखें नहीं मिष्ट निबौरी ताहि
७४. जेठ कौ मान अरहर में ऊ राख्यो ऐ
७५. जैसी करनी करी तैसौ फल मिलौ
७६. जो जस करै सो तस फल चाखा
७७. जैसौ खाओ अन तैसौ उपजै मन
७८. जैसौ बोवै वैसौ पावै
७९. जो तोकूँ काँटौ बुवै ताहि बोय तू फूल
तो कूँ फूल के फूल हैं वाकूँ हैं तिलसूल
८०. जो दिन जाय अनंद सों जीवन कौ फल सोय
८१. जौ भर दाब सौ भर खुसामद
८२. झरबेरी के बेर जितने चाहों झारौ
८३. टूटी कों बूटी नाँ ऐं
८४. टेंटी पीलू काल के मीत
८५. टेढ़े पेड़ की छाया टेढ़ी
८६. डूबते कों तिनका कौ सहारौ

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

८७. ढाक के तीन पात
८८. ढाक चढ़त बारी गिरै करै राव सों रोस
८९. तिनका की ओट पहाड़ (तिल)
९०. तुम डाल-डाल हम पात-पात
९१. तुलसी काया खेत है मनसा भयौ किसान
पाप पुन्न दोउ बीज है, बुबें सो लुनै निदान
९२. तेरी सत्ता के बिना प्रभु सब मंगल मूल
पत्ता तक हिलता नहीं खिलै न कोई फूल
९३. थोथा चना बाजै घना
९४. थोथौ फटकै उड़ि उड़ि जाय
९५. दाँत भये तब चना न मिल-दाँत नाँहि तब चना बने
९६. दाने दाने पै खानेवाले की मुहर
९७. दूधन न्हाऔ पूतन फलौ
९८. द्वार की बेरिया अच्छी नाँय
दूर कौ नोहरौ जौरे कौ बौहरौ अच्छौ नाँय
९९. धान कौ गाम पयार ते
१००. नदी किनारे रूखड़ जब-तब होय विनास
१०१. न रहैगौ बाँस न बजैगी बाँसुरी
१०२. नीम न मीठी होंय सींच गुड़ घी ते
१०३. पके आम टपकबे कौ डर
१०४. पत्ता टूटा डाल का ले गया पवन उड़ाय
अबके बिछुरे ना मिलें दूर पड़ेंगे जाय
१०५. पत्ते तौ झर जायँगे लकड़ी खड़ी पर जायगी
१०६. पत्ते-पत्ते की कतरन न्यारी है तेरे हाथ कतरनी कहीं नहीं
१०७. परजा जड़ है राज की राजा है ज्यों रूख
१०८. पराये पीर कूँ मलीदा घर के देवतन कूँ धतूरौ
१०९. पांडेजी पछताऔगे वही चना की खाऔगे
११०. पिया करनी के फल पाऔगे
१११. पुन्न की जड़ हरी
११२. पेड़ की जड़ धरती लुगाई की जड़ चूल्हा
११३. फल बिन डार नबै कबहूँ ना
११४. फूलहिं फलहिं न बैंत जदपि सुधा बरसहिं जलद
११५. फूलैगौ सो कुम्हलैगौ
११६. फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ गँवई गाँव गुलाब
११७. बंदर का जानें अदरक कौ स्वाद
११८. बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर
११९. बर पीपर की छाँह कि संगत घनों की
भाँग तमाखू मिर्च कि मुट्ठी चनों की

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

१२०. बाँस जरायौ तैसौ बंस जरायौ
१२१. बाप डाल डाल बेटा पात पात
१२२. बाप बिनौरा बापरौ पूत भयौ चौतार
१२३. बार लगायी खेत कूँ खेत बार कूँ खाय
१२४. राजा है चोरी करै न्याय कौन घर जाय
१२५. बारे पूत हरी री खेती है है कब धों किननें देखी
१२६. बास न जात प्याज खाये की चाहे केसर डार के घृत्त मिलाऔ
१२७. बिंदाबन के बिरछ कौ मरम न जानें कोय
१२८. बिन पेरे तिल तेल न डारै
१२९. बिरछन में इमली बड़ी रे ग्वाकी सीतल छाँह
१३०. बुरे कौ फल तौ बुरौ ई मिलै
१३१. वह वृक्ष किस काम का पंछी को छाया नहीं
१३२. बेरिया कौ झार निसोड़े की गुठली
१३३. बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ ते खाय
१३४. बोला पठयौ बीज कूँ बालि पके घर आयौ
१३५. भुस में लट्ठ
१३६. मनुआँ खेती करौ हरि नाम की
१३७. मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जराय
१३८. मालिन अपने बेर खट्टे नाँय बताबै
१३९. माली आवत देखिकें कलियन करी पुकार
फूले फूले चुन लिए काल हमारी बार
१४०. माली सींचै सौ घड़ा रित आयें फल होय
१४१. मूँग और मौठ में कौन बड़ी
१४२. मूरी के पातन के बदले को मुक्ताहल दै है
१४३. यह मुँह और मसूड़ की दाल
१४४. राई ते पर्वत करे पर्वत राई माँहि
१४५. राई बढ़े न तिल घटै
१४६. रामभरोसे जे रहैं परबत पै हरियाँय
१४७. रूख टूटके गिर परे जड़ जब जायें सूख
१४८. लगे कनागत फूले काँस बामन उछरे नौ-नौ बाँस
१४९. सत्त की जड़ हरी
१५०. सब धान बाईस पँसेरी
१५१. सबर कौ फल मीठो होऐ
१५२. सहज पकै सो मीठा
१५३. सागन में साग ल्हालेरे कौ साग
१५४. सामन फूलै चैत फरै झूटी साख बबूल भरै
१५५. सो निदाध फूलौ फलै आक डहडहौ होय
१५६. सोई नागर बड़ी ठकुरानी जाकी कुठिया ज्वार

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

१५७. स्यारीपन की जल्दी ते बेर नाँय पकै करें
१५८. हंसन खेलन कूँ आरी-बारी देखन कूँ फुलबारी
कथावार्ता कूँ केर की डरिया हवा करन कूँ केसर-क्यारी
१५९. हिसाब जौ-जौ बख्शीश सौ-सौ
१६०. होनहार बिरवान के होत चीकने पात

१.६. पहेलियाँ

१. अड़ी थी खड़ी थी नौ लाख मोती जड़ी थी।
बाबजी के बाग में दुसाला ओढ़े खड़ी थी। (मक्का)
२. आठ पहर चौंसठ घड़ी ठाकुर पै ठकुरानी चढी। (तुलसी)
३. इत कूँ खूँटा उत कूँ खूँटा बीच में गाय का दुद्धा मीठा। (सिंघाड़ा)
४. ऊजरी बिलाई हरी-हरी पूँछ।
तो पै न आबै अपनी मैया ते पूँछ। (मूली)
५. एक अनोंखौ फूल तू जान पहलें बूढ़ौ पीछें ज्वान।
ता फल को तुम देखो हाल बाहिर खाल तौ भीतर बाल। (भुटिया)
६. एक खेत में ऐसा हुआ आधा बगुला आधा सुआ। (मूली)
७. एक पेड़ सरकउआ वापै बैठे चील न कौआ। (धुआँ)
८. एक नार देखत में हरी सब अंदर लोहू से भरी।
जो कोई बाकी संगत करै अपना अंग खून से भरै। (मेहँदी)
९. एक पेड़ अलबत्ता जिसमें फूल न पत्ता। (अमखेल)
१०. एक संदूक काँटे जड़ी जब खोली तब चंपा कली। (कटहल)
११. कटोरा पै कटोरा बेटा बाप से भी गोरा। (गोला-नारियल)
१२. कामिनि एक धरा के ऊपर उलटे मुख ते जाप करै।
जटा जूट लहराय सीस पै दसौ दिसन ते झुकी परै। (गाजर)
१३. चली सखीं सब मार झुंड, आई नहाने सीतल कुंड।
कपड़े पहने भीतर गयी, नंगी होकर बाहर गई। (दाल)
१४. छोटे से गोपालदास कपड़ा पहरें सौ पचास। (प्याज)
१५. पत लाल लाल पत गोल गोल, खता की दैयाँ सी-सी। (मिर्च)
१६. पीरी पीरी तीहरी केसर कौ सौ रंग।
ग्यारह देवर फिर गए तब गयी जेठ के संग। (अरहर)
१७. बड़ी जिठानी सबन की झबर झबारौ अंग।
पीरी फरिया छींट की, लखि द्यौरानी दंग। (अरहर)
१८. बाप खुरदुरौ बेटा चीकनौ, नाती के मूँछ निकर आई। (आम)
१९. मट काल काल मट गोल गोल
मट आ हा हा मट हू हू हू । (काली मिर्च)
२०. मिल्यौ रहै तौ पुरिख है अलग रहें तो नारि।
सौने को सौ रंग है चातुर लेउ विचार। (चना : दार)

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

२१. लाल फल काँटे लदा खावे जग संसार।
बेर-बेर में कहत हूँ बूझे क्यों न गँवार। (बेर)
२२. सब्ज रंग का लंबा कीड़ा ऐसा मीठा जैसे सीरा। (शहतूत)
२३. सावन फूलें चैत फरें झूठी साख बबूल भरैं। (बबूल)
२४. हरी जमीन खुरदरे काँटे जो न बूझें उसके नाक-कान काटे। (कटहल)

- स्रोत : सासनी के गाँवों में

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.